



बाल विकास एवं विकास के चरण : एक विवेचना

सुशीला देवी

व्याख्याता , शिक्षाशास्त्र

सार

बाल विकास, मनुष्य के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक उनमें होने वाले जैविक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को कहते हैं, जब वे धीरे-धीरे निर्भरता से और अधिक स्वायत्तता की ओर बढ़ते हैं। चूंकि ये विकासात्मक परिवर्तन काफी हद तक जन्म से पहले के जीवन के दौरान आनुवंशिक कारकों और घटनाओं से प्रभावित हो सकते हैं इसलिए आनुवंशिकी और जन्म पूर्व विकास को आम तौर पर बच्चे के विकास के अध्ययन के हिस्से के रूप में शामिल किया जाता है। संबंधित शब्दों में जीवनकाल के दौरान होने वाले विकास को सन्दर्भित करने वाला विकासात्मक मनोविज्ञान और बच्चे की देखभाल से संबंधित चिकित्सा की शाखा बालरोगविज्ञान (पीडीएट्रिक्स) शामिल हैं। विकासात्मक परिवर्तन, परिपक्वता के नाम से जानी जाने वाली आनुवंशिक रूप से नियंत्रित प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप या पर्यावरणीय कारकों और शिक्षण के परिणामस्वरूप हो सकता है लेकिन आम तौर पर ज्यादातर परिवर्तनों में दोनों के बीच का पारस्परिक संबंध शामिल होता है। बच्चे के विकास की अवधि के बारे में तरह-तरह की परिभाषाएँ दी जाती हैं क्योंकि प्रत्येक अवधि के शुरू और अंत के बारे में निरंतर व्यक्तिगत मतभेद रहा है।

मुख्य शब्द : बाल विकास, विकासात्मक, क्रियाविधि इत्यादि।

प्रस्तावना

बाल्यावस्था जीवनकालिक विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था को दो भागों में विभाजित किया गया है- पूर्व बाल्यावस्था एवं उत्तर बाल्यावस्था आरंभिक 2 से 6 वर्ष की आयु पूर्व बाल्यावस्था कहलाती है जिसमें बच्चे की आत्मनिर्भरता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। यह अवधि पाठशाला में प्रवेश की होती है। इसलिए इसे 'स्कूल पूर्व आयु' भी कहा जाता है और 'टोली पूर्व आयु' भी कहा जाता है। इस अवधि में बालक सामाजिक व्यवहारों के आधारभूत तत्वों को सीखना आरंभ करता है। उत्तर बाल्यावस्था का आरंभ 6 वर्ष की आयु से होता है तथा वयःसंधि के प्रारंभ अर्थात् 12 वर्ष तक चलता रहता है। बालक स्कूल में प्रवेश पा चुका रहता है। इस अवस्था को 'टोली की अवस्था' भी कहा जाता है। इसे 'प्रारम्भिक स्कूल अवस्था' भी कहा जाता है। अतः जीवन के अनेक पक्षों के विकास की दृष्टि से यह आयु अत्यंत महत्व रखती है। बच्चों के सामाजिक की बुनियादी परिवार से पड़ती है।



सामाजिक की इस प्रक्रिया में माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्य, रिश्तेदार प्रमुख अभिकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तत्पश्चात् बाल्यावस्था में आस-पड़ोस, मित्रमंडली एवं विद्यालय की भूमिका भी सामाजिक विकास प्रक्रम में महत्वपूर्ण हो जाती है। जैसे-जैसे बालक परिवार के दायरे से निकलकर बाहरी लोगों से सम्पर्क बनाता है वैसे-वैसे उसकी सामाजिक दुनिया विस्तृत होती जाती है। माता-पिता पर बच्चे की निर्भरता कम होने लगती है तथा उसके स्थान पर परिवार के बाहरी व्यक्तियों से सम्बन्ध बनते जाते हैं। हिथर्स (1957) का मानना है कि घर के बाहर की आरंभिक सामाजिक अनुभव संवेगों की दृष्टि से बालक के लिए प्रायः समस्या उत्पन्न करने वाले होते हैं, विशेषतः तब जब वह अपने से बड़े बालकों के सम्पर्क में आता है। बाहरी लोगों से समायोजन करने में उसकी सफलता बहुत कुछ इस बात से प्रभावित होती है कि घर के अन्दर उसे किस प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए हैं। यथा-जनतान्त्रिक ढंग से पले-बढ़े बच्चों का समायोजन घर के बाहर सामाजिक समायोजन तथा पालन-पोषण की शैली से भी निर्धारित होता है। ये बच्चे सत्तावादी, घरेलू परिवेश वाले बालकों की तुलना में अधिक समायोजनशील होते हैं। इसी प्रकार परिवार में बालक की संस्थिति भी उसके घर के बाहर के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। बच्चे का जन्मक्रम, माता-पिता द्वारा पालन पोषण की शैली, बच्चे के प्रति उनकी अभिवृत्तियाँ, परिवार वातावरण सभी कुछ बच्चे के प्रारंभिक अनुभवों को प्रभावित करते हैं।

विकास की क्रियाविधि

हालाँकि विकासात्मक परिवर्तन कालानुक्रमिक आयु के साथ-साथ चलता है, विकास में स्वयं आयु का कोई योगदान नहीं होता है। विकासात्मक परिवर्तनों की बुनियादी क्रियाविधि या कारण, आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारक होते हैं। आनुवंशिक कारक कोशिकीय परिवर्तनों जैसे समग्र विकास, शरीर और दिमाग के हिस्सों के अनुपात में होने वाले परिवर्तनों और दृष्टि एवं आहार संबंधी जरूरतों जैसे कार्य के पहलुओं की परिपक्वता के लिए जिम्मेदार होते हैं। क्योंकि जींस को "बंद" और "चालू" किया जा सकता है इसलिए समय समय पर व्यक्ति की प्रारंभिक जीनोटाइप के कार्य में परिवर्तन हो सकता है जिससे आगे चलकर विकासात्मक परिवर्तन में तेजी आ सकती है। विकास को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों में आहार एवं रोग जोखिम के साथ-साथ सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक अनुभव भी शामिल हो सकते हैं। हालाँकि, पर्यावरणीय कारकों की परीक्षा से यह भी पता चलता है कि युवा मनुष्य पर्यावरणीय अनुभवों की एक काफी व्यापक सीमा में भी जीवित रह सकते हैं।



स्वतंत्र क्रियाविधि के रूप में काम करने के बजाय आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारक अक्सर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं जिसकी वजह से विकासात्मक परिवर्तन होता है। बच्चे के विकास के कुछ पहलू उनकी नमनीयता (प्लास्टिसिटी) के लिए या उस हद तक उल्लेखनीय हैं जिस हद तक विकास की दिशा का मार्गदर्शन पर्यावरणीय कारकों द्वारा किया जाता है और साथ ही साथ आनुवंशिक कारकों द्वारा शुरू किया जाता है। उदाहरण के लिए, ऐसा लगता है कि एलर्जी संबंधी प्रतिक्रियाओं का विकास अपेक्षाकृत रूप से प्रारंभिक जीवन के कुछ पर्यावरणीय कारकों के जोखिम की वजह से होता है और प्रारंभिक जोखिम से सुरक्षा करने से बच्चे में परिवर्ती एलर्जिक प्रतिक्रिया के दिखाई देने की कम सम्भावना रह जाती है। जब विकास के किसी पहलू पर प्रारंभिक अनुभव का बहुत ज्यादा असर पड़ता है तो कहा जाता है कि इसमें बहुत ज्यादा नमनीयता (प्लास्टिसिटी) दिखाई देती है; जब आनुवंशिक स्वाभाव विकास का प्राथमिक कारक होता है तो कहा जाता है कि नमनीयता कम है। नमनीयता में अंतर्जात कारकों जैसे हार्मोन के साथ-साथ बहिर्जात कारकों जैसे संक्रमण का मार्गदर्शन शामिल हो सकता है।

विकास के चरण

माइलस्टोंस विशिष्ट शारीरिक और मानसिक क्षमताओं (जैसे चलने और समझने की भाषा) में होने वाले परिवर्तन हैं जो एक विकासात्मक अवधि के अंत और दूसरी विकासात्मक अवधि के आरम्भ को चिह्नित करते हैं। चरण सिद्धांतों के लिए माइलस्टोंस से चरण परिवर्तन का संकेत मिलता है। कई विकास कार्यों की पूर्णता के अध्ययनों ने विकासात्मक माइलस्टोंस के साथ जुड़े विशिष्ट कालानुक्रमिक आयु को स्थापित किया है। बच्चे के विकास से संबंधित एक आम चिंता विकासात्मक देरी है जिसमें महत्वपूर्ण विकासात्मक माइलस्टोंस के लिए एक आयु-विशिष्ट क्षमता में देरी शामिल है। विकासात्मक देरी की रोकथाम और उसमें आरंभिक हस्तक्षेप बच्चे के विकास के अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। विकासात्मक देरी की पहचान किसी माइलस्टोन की विशिष्ट परिवर्तनीयता के साथ तुलना करके, न कि उपलब्धि में औसत आयु के संबंध में, करनी चाहिए।

बच्चे के विकास के पहलू

बच्चे का विकास का मुद्दा कोई एकाकी विषय नहीं है बल्कि यह कुछ हद तक व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं के लिए अलग ढंग से प्रगति करता है। यहाँ कई शारीरिक और मानसिक विशेषताओं के विकास का वर्णन दिया गया है।

शारीरिक विकास



क्या विकसित होता है? जन्म के बाद 15 से 20 वर्ष की आयु तक कद और वजन के क्षेत्र में शारीरिक विकास होता है; सही समय पर जन्म लेने के समय के औसत वजन 3.5 किलो और औसत लम्बाई 50 सेमी से बढ़ते-बढ़ते व्यक्ति अपने पूर्ण वयस्क आकार तक पहुँचता है। जैसे-जैसे कद और वजन बढ़ता जाता है वैसे-वैसे व्यक्ति के शारीरिक अनुपात भी बदलते हैं, नवजात शिशु का सिर अपेक्षाकृत बड़ा और धड़ तथा बाकी अंग छोटे होते हैं जो कि वयस्क होने पर अपेक्षाकृत रूप से छोटे सिर और लंबे धड़ तथा अंगों में परिणत हो जाता है

- **विकास की गति और पद्धति**

शारीरिक विकास की गति जन्म के बाद के महीनों में तेज होती है और उसके बाद धीमी पड़ जाती है इसलिए जन्म के समय का वजन पहले चार महीनों में दोगुना और 12 महीने की उम्र में तिगुना हो जाता है लेकिन 24 महीने तक चौगुना नहीं होता है। यौवन के थोड़ा पहले तक विकास धीमी गति से होता रहता है, उसके बाद विकास की गति काफी तीव्र हो जाती है। शरीर के सभी हिस्सों में होने वाली वृद्धि की दर और समय में एकरूपता नहीं होती है।

विकासात्मक परिवर्तन की क्रियाविधि

वृद्धि दर के निर्धारण में और खास तौर पर आरंभिक मानव विकास की अनुपातिक विशेषता में होने वाले परिवर्तनों के निर्धारण में आनुवंशिक कारकों की एक मुख्य भूमिका होती है। हालाँकि आनुवंशिक कारकों की वजह से केवल तभी अधिकतम वृद्धि हो सकती है जब पर्यावरणीय परिस्थितियां अनुकूल हों। खराब पोषण और अक्सर चोट और बीमारी की वजह से व्यक्ति का वयस्क कद घट सकता है लेकिन बेहतरीन माहौल की वजह से कद में बहुत ज्यादा वृद्धि नहीं हो सकती है जितना कि आनुवंशिकता से निर्धारित होता हो।

- **जनसंख्या अंतर**

वृद्धि के क्षेत्र में जनसंख्या अंतर काफी हद तक वयस्क के कद से संबंधित होते हैं। वयस्क अवस्था में काफी लंबे रहने वाले जातिगत समूहों के बच्चे छोटे वयस्क कद वाले समूहों की तुलना में जन्म के समय और बचपन के दौरान भी लंबे होते हैं। पुरुष भी कुछ हद तक लंबे होते हैं हालाँकि वयस्क अवस्था में मजबूत यौन द्विरूपता वाले जातिगत समूहों में यह अधिक स्पष्ट होता है। विशेषतया कुपोषण के शिकार लोग भी जीवन भर छोटे या नाटे रहते हैं। हालाँकि वृद्धि दर और पद्धति में जनसंख्या अंतर अधिक नहीं होता है, सिवाय इसके कि खराब पर्यावरणीय परिस्थितियां यौवन और संबंधित वृद्धि दर में देरी का कारण बन सकती हैं।



- **व्यक्तिगत अंतर**

बचपन में कद और वजन के मामले में काफी व्यक्तिगत अंतर होता है। इनमें से कुछ अंतरों की वजह पारिवारिक आनुवंशिक कारक और अन्य अंतरों की वजह पर्यावरणीय कारक हैं लेकिन विकास के क्रम में कहीं-कहीं प्रजनन परिपक्वता में व्यक्तिगत अंतरों का उन पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है।

मोटर (परिचालन) विकास

- **विकास की गति और पद्धति**

मोटर विकास की गति प्रारंभिक जीवन में तेज होती है क्योंकि नवजात शिशु की परिवर्ती गतिविधियों में से कई पहले साल के भीतर बदल जाती हैं या गायब हो जाती हैं और बाद में यह गति धीमी पड़ जाती है। शारीरिक वृद्धि की तरह मोटर विकास से भी सेफालोकौडल (सिर से पांच तक) और प्रोक्सिमोडिस्टल (धड़ से अग्रांग तक) विकास की पूर्वानुमेय पद्धतियों का पता चलता है और शरीर के निचले हिस्से या हाथों और पैरों से पहले सिर के अंतिम सिरे और अधिक केन्द्रीय क्षेत्रों की गतिविधियों या हरकतों पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है। गतिविधि के प्रकारों का विकास चरण जैसे क्रमों में होता है; उदाहरण के लिए, 6 से 8 महीनों की हरकत में दोनों हाथों और दोनों पैरों पर रेंगना और उसके बाद खड़े होनी की कोशिश करना, किसी चीज़ को पकड़ते समय उसके "चक्कर" लगाना, किसी वयस्क का हाथ पकड़कर चलना और अंत में स्वतंत्र रूप से चलना शामिल है।

- **मोटर विकास की क्रियाविधि**

मोटर विकास में शामिल क्रियाविधियों या प्रक्रियाओं में कुछ आनुवंशिक घटक शामिल होते हैं जो एक निर्दिष्ट आयु में शरीर के हिस्सों के शारीरिक आकार के साथ-साथ मांसपेशियों और हड्डियों की ताकत से जुड़े पहलुओं का भी निर्धारण करते हैं। पोषण और व्यायाम भी ताकत का निर्धारण करते हैं और इसलिए ये आसानी और सटीकता का भी निर्धारण होता है जिसके साथ शरीर के हिस्से को हिलाया-डुलाया जा सकता है।

- **व्यक्तिगत अंतर**

सामान्य व्यक्ति की मोटर क्षमता सामान्य होती है और यह कुछ हद तक बच्चे के वजन और निर्माण पर निर्भर करती है। हालाँकि शैशव काल के बाद सामान्य व्यक्तिगत अंतरों पर अभ्यास, पर्यवेक्षण और विशिष्ट गतिविधियों के



अनुदेश का बहुत ज्यादा असर पड़ता है। असामान्य मोटर विकास स्वलीनता या मस्तिष्क पक्षाघात जैसी समस्याओं या विकासात्मक विलम्ब का एक संकेत हो सकता है।

- **जनसंख्या अंतर**

मोटर विकास के क्षेत्र में कुछ जनसंख्या अंतर भी देखने को मिलते हैं जिनके तहत लड़कियों को छोटी मांसपेशियों के इस्तेमाल से कुछ लाभ मिलता है जिनमें होठों और जीभ से ध्वनियों का उच्चारण भी शामिल है। नवजात शिशुओं की परिवर्ती गतिविधियों में जातीय अंतर होने की खबर मिली है जिससे यह पता चलता है कि कुछ जैविक कारक भी क्रियाशील हैं। सांस्कृतिक अंतर मोटर कौशल को सीखने में प्रोत्साहन दे सकते हैं जैसे स्वच्छता प्रयोजनों के लिए केवल बाएँ हाथ का इस्तेमाल करना और अन्य सभी कार्यों के लिए दाएँ हाथ का इस्तेमाल करना जिससे जनसंख्या अंतर का निर्माण होता है।

संज्ञानात्मक/बौद्धिक विकास

- **संज्ञानात्मक विकास की क्रियाविधि**

संज्ञानात्मक विकास में आनुवंशिक और अन्य जैविक क्रियाविधि होती हैं जैसे कि मानसिक मंदता के कई आनुवंशिक कारकों में देखा गया है। हालाँकि यह मान लेने के बावजूद कि मस्तिष्क कार्यों की वजह संज्ञानात्मक घटनाएँ होती हैं, विशिष्ट मस्तिष्क परिवर्तनों को मापना और यह दिखाना संभव नहीं है कि उनकी वजह से ही संज्ञानात्मक परिवर्तन होते हैं।

- **व्यक्तिगत अंतर**

उन उम्रों में सामान्य व्यक्तिगत अंतर देखने को मिलते हैं जिन उम्रों में विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षमताओं की प्राप्ति होती है लेकिन औद्योगिक देशों में बच्चों की स्कूली शिक्षा इस धारणा पर आधारित होती है कि ये अंतर बहुत बड़े नहीं हैं। संज्ञानात्मक विकास में असामान्य विलम्ब से उन संस्कृतियों के बच्चों के लिए समस्याएं पैदा हो सकती हैं जो काम के लिए और स्वतंत्र जीवनयापन के लिए उन्नत संज्ञानात्मक कौशलों की मांग करते हैं।

- **जनसंख्या अंतर**

संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में बहुत कम जनसंख्या अंतर देखने को मिलते हैं। लड़कों और लड़कियों के कौशल और वरीयताओं में कुछ अंतर देखने को मिलता है लेकिन समूहों में बहुत कुछ एक साथ होता है। ऐसा लगता है कि



अलग-अलग जातीय समूहों की संज्ञानात्मक उपलब्धि में पाए जाने वाले अंतर सांस्कृतिक या अन्य पर्यावरणीय कारकों के परिणाम हैं।

सामाजिक-भावनात्मक विकास

- विकास की गति और पद्धति

सामाजिक भावनात्मक विकास के कुछ पहलुओं, जैसे सहानुभूति, का विकास धीरे-धीरे होता है लेकिन अन्य पहलुओं, जैसे भय, में बच्चे की भावना के अनुभव का एक अपेक्षाकृत अचानक पुनर्गठन शामिल हो सकता है। यौन और रोमांटिक भावनाओं का विकास शारीरिक परिपक्वता के संबंध में होता है।

- सामाजिक और भावनात्मक विकास की क्रियाविधि

ऐसा लगता है कि आनुवंशिक कारक पूर्वानुमेय आयु में होने वाले भय और परिचित लोगों के प्रति लगाव जैसे कुछ सामाजिक-भावनात्मक विकासों को नियंत्रित करते हैं। अनुभव इस बात को निर्धारित करने में एक मुख्य भूमिका निभाता है कि कौन-कौन से लोग परिचित हैं, किन-किन सामाजिक नियमों का पालन किया जाता है और किस तरह क्रोध व्यक्त किया जाता है।

- व्यक्तिगत अंतर

सामाजिक-भावनात्मक विकास के क्रम में व्यक्तिगत अंतर का होना कोई आम बात नहीं है लेकिन एक सामान्य बच्चे से दूसरे सामान्य बच्चे की भावनाओं की तीव्रता या अभिव्यक्तित्व में बहुत ज्यादा अंतर हो सकता है। विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियात्मकताओं की व्यक्तिगत प्रवृत्तियां शायद स्वाभाविक होती हैं और उन्हें स्वाभाविक अंतर के रूप में सन्दर्भित किया जाता है। सामाजिक भावनात्मक विशेषताओं का असामान्य विकास थोड़ा अलग किस्म हो सकता है या इतना गंभीर हो सकता है कि इससे मानसिक बीमारी का संकेत मिलने लगे।

- जनसंख्या अंतर

बड़े बच्चों में जनसंख्या अंतर मौजूद हो सकता है, उदाहरण के तौर पर यदि उन्होंने यह सीखा है कि बच्चों द्वारा भावना की अभिव्यक्ति करना या लड़कियों की तुलना में अगल तरीके से व्यवहार करना उचित है, या अगर एक जातीय समूह के बच्चों द्वारा सीखे गए रीति-रिवाज किसी दूसरे बच्चे द्वारा सीखे गए रीति-रिवाज से अलग हैं।



भाषा

- विकास की गति और पद्धति

ग्रहणशील भाषा (दूसरों की बात की समझ) में क्रमिक विकास होता है जिसकी शुरुआत लगभग 6 महीने की आयु में होती है। हालाँकि भाववाहक भाषा और शब्दों के निर्माण में, लगभग एक साल की उम्र में इसकी शुरुआत के बाद से काफी तेजी आ जाती है और साथ में दूसरे साल के बीच में द्रुत शब्द अधिग्रहण का एक "शब्दावली विस्फोट" सा होने लगता है।

- भाषा के विकास की क्रियाविधि

बच्चे के सीखने के कार्य को सहज बनाने में वयस्क वार्तालाप की महत्वपूर्ण भूमिका होने के बावजूद सिद्धांतकारों में इस बात को लेकर काफी असहमति है कि बच्चों के आरंभिक अर्थ और अर्थपूर्ण शब्द, बच्चे के संज्ञानात्मक कार्यों से संबंधित आंतरिक कारकों की तुलना में किस हद तक सीधे वयस्क वार्तालाप से उत्पन्न होते हैं। नए शब्दों के प्रारंभिक मानचित्रण, प्रसंग से परे शब्दों को समझने की क्षमता और अर्थ को परिष्कृत करने के बारे में कई अलग-अलग निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।[3] एक परिकल्पना को वाक्यात्मक बूटस्ट्रेपिंग परिकल्पना के नाम से जाना जाता है, जो वाक्य संरचना से मिली व्याकरण संबंधी जानकारी का इस्तेमाल करके इशारे से अर्थ का अनुमान लगाने की बच्चे की क्षमता को सन्दर्भित करती है।[28] एक अन्य परिकल्पना बहुत-मार्गी मॉडल है जिसमें यह तर्क दिया जाता है कि प्रसंग से बंधे शब्द और सन्दर्भ संबंध शब्द अलग-अलग मार्गों का अनुसरण करते हैं; पहले वाले को घटना प्रदर्शनों के आधार पर चित्रित किया जाता है और बाद वाले को मानसिक प्रदर्शनों के आधार पर चित्रित किया जाता है।

- व्यक्तिगत अंतर

धीमा अभिव्यंजक भाषा विकास (सेल्ड या एसईएलडी) जो कि सामान्य समझ के साथ शब्दों के इस्तेमाल में होने वाली एक देरी है, बच्चों के एक छोटे अनुपात की विशेषता है जो बाद में सामान्य भाषा उपयोग का प्रदर्शन करते हैं। डिस्लेक्सिया बच्चे के विकास का एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि लगभग 5% जनसंख्या (पश्चिमी जगत में) पर इसका असर पड़ता है। मूलतः यह एक विकार है जिसकी वजह से बच्चे अपनी बौद्धिक क्षमताओं के अनुरूप पढ़ने,



लिखने और वर्तनी या उच्चारण करने का भाषा कौशल प्राप्त करने में विफल हो जाते हैं। डिस्लेक्सिया ग्रस्त बच्चों के भाषा विकास में सूक्ष्म भाषण दुर्बलता से लेकर गलत उच्चारण और शब्द ढूँढने में मुश्किलों तक, काफी अंतर दिखाई देता है। सबसे आम ध्वनी कठिनाइयाँ, मौखिक अल्पकालिक स्मृति और ध्वनि जागरूकता की सीमितताएँ हैं।

उपसंहार

शिशु जहाँ वयस्कों के साथ अधिक संतुष्टि रहते हैं, वहीं उसके लिए छोटे बच्चों का सम्पर्क सन्तोषप्रद नहीं होता, परन्तु तीन वर्ष की आयु के बालक अन्य बालकों की ओर देखने में रुचि लेते हैं और यह उनसे सम्पर्क बनाने की प्रथम कोशिश होती है। इस अवस्था में बालक समानांतर खेल खेलता है जिसको दो बालक साथ होते हुए भी स्वतंत्र रूप से स्वांतः सुखाय, खेलते हैं। इसके बाद 'सहचारी खेल' का चरण आता है जिसमें बालक अन्य बालकों के साथ खेलता है तथा एक जैसी क्रियाएँ करता है। अंततः 'सहयोगी खेल' का चरण आता है जिसमें बालक समूह का एक अंग बन जाता है। मार्शल (1961) के अनुसार 3-4 वर्ष की अवस्था में बालक में समूह के प्रति लगाव विकसित होता है जो आयु में वृद्धि के साथ-साथ बढ़ता जाता है। इस उम्र का बालक प्रायः तटस्थ दृष्टा की तरह होता है जो अन्य बालकों को मात्र खेलते हुए देखता है, अन्य बालकों से बातें करता है, लेकिन समूह के खेल में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं होता। 4 वर्ष की आयु तक बालक में 'संगठित खेल' का आरंभिक रूप परिलक्षित होने लगता है। वह दूसरों के प्रति सचेत हो जाता है और आत्म प्रदर्शन द्वारा दूसरों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] Kail RE (2006). Children and Their Development (4 सं०). Prentice Hall. आई.एस.बी.एन. 978-0131949119.
- [2] ब्रोनफेनब्रेनर, यू (1979). दी इकोलॉजी ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट: एक्सपेरिमेंट्स बाय नेचर एंड डिजाइन . केम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (आईएसबीएन 0-674-22457-4)
- [3] Smith PK, Cowie H and Blades M, Understanding Children's Development, Basic psychology (4 संस्करण), Oxford, England: Blackwell
- [4] Mind in Society: The development of higher psychological processes (Translation by Michael Cole). Cambridge, MA: Harvard University Press. 1978 (Published originally in Russian in 1930).
- [5] Thought and Language. Cambridge, MA: MIT Press. 1962.



- [6] Cultural, Communication, and Cognition: Vygotskian Perspectives. Cambridge University Press. 1985.
- [7] वाटसन, जे.बी. (1926). वॉट दी नर्सरी हैज टू से अबाउट इन्स्टिंगक्ट. इन सी. मार्किसन (एड्स.) साइकोलॉजी ऑफ 1925. वोर्चेस्टर, एमए: क्लार्क विश्वविद्यालय प्रेस.
- [8] व्हाइट, एस.एच. (1968). दी लर्निंग मैच्योरेशन कंट्रोलर्स: हॉल टू हल. मेरिल-पाल्मर क्वाटर्ली, 14, 187-196.
- [9] Lemma A (2007), "Psychodynamic Therapy: The Freudian Approach", प्रकाशित Dryden W, Handbook of Individual Therapy (5 संस्करण), Sage publications
- [10] एस्लिन, आर. (1993). "कमेंट्री: दी स्ट्रेंज एट्रिक्टिवनेस ऑफ डायनामिक सिस्टम्स टू डेवलपमेंट." इन एल. स्मिथ, ई. थेलेन (एड्स.), ए डायनामिक सिस्टम्स एप्रोच: एप्लीकेशंस. केम्ब्रिज, एमए: एमआईटी प्रेस.